ब्राह्मण उवाच

तथेत्युक्त्वा निदाघेन प्रणिपातपुरः सरम्। पूजितः परया भक्त्या इच्छातः प्रययावृभुः ॥३६॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

सोलहवाँ अध्याय

ब्राह्मण उवाच

ऋभुर्वर्षसहस्रे तु समतीते नरेश्वर। निदाघज्ञानदानाय तदेव नगरं ययौ॥१॥

नगरस्य बहिः सोऽथ निदाघं ददृशे मुनिः। महाबलपरीवारे पुरं विशति पार्थिवे ॥२॥

दूरे स्थितं महाभागं जनसम्मर्दवर्जकम्। क्षुत्क्षामकण्ठमायान्तमरण्यात्ससमित्कुशम् ॥३॥

दृष्ट्वा निदाघं स ऋभुरुपगम्याभिवाद्य च। उवाच कस्मादेकान्ते स्थीयते भवता द्विज ॥४॥

निदाघ उवाच

भो विप्र जनसम्मर्दो महानेष नरेश्वरः। प्रविविक्षुः पुरं रम्यं तेनात्र स्थीयते मया ॥५॥

ऋभुरुवाच

नराधिपोत्र कतमः कतमश्चेतरो जनः। कथ्यतां मे द्विजश्रेष्ठ त्वमभिज्ञो मतो मम ॥६॥

निदाघ उवाच

योऽयं गजेन्द्रमुन्मत्तमद्रिशृङ्गसमुच्छ्रितम्। अधिरूढो नरेन्द्रोऽयं परिलोकस्तथेतरः ॥७॥

ऋभुरुवाच

एतौ हि गजराजानौ युगपद्दर्शितौ मम। भवता न विशेषेण पृथक्चिह्नोपलक्षणौ॥८॥

रूप है ॥३५॥ **ब्राह्मण (जड भरत) ने कहा—** निदाघ के द्वारा बहुत अच्छा कहकर साष्टाङ्ग प्रणिपात पूर्वक परमाभक्ति से पूजित होकर ऋभु अपनी इच्छा के अनुसार चले गये ॥३६॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के द्वितीय अंश के पन्द्रहवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥१५॥

ऋभु की आज्ञा से निदाघ का घर जाना

ब्राह्मण ने कहा— राजन् ! एक हजार वर्ष बीत जाने पर ऋभु निदाघ को ज्ञान प्रदान करने के लिए उसी नगर में गये ॥१॥ उन मुनि ने नगर के बाहर निदाघ को देखा कि राजा अपनी विशाल सेना के साथ नगर में प्रवेश कर रहे हैं ॥२॥ उन्होंने देखा कि महाभाग निदाघ जनसम्मर्द से दूर वन से समिधा तथा कुश आदि लेकर भूखे प्यासें आ रहे हैं ॥३॥ उनको वैसा देखकर ऋभु उनके पास जाकर प्रणाम करके पूछे हे द्विज ! आप एकान्त में क्यों खड़े हैं ?॥४॥ **निदाघ ने कहा—** यह राजा नगर में प्रवेश करना चाहता है, इसलिए नगर में बहुत भीड़ है, इसीलिए मैं यहाँ खड़ा हूँ ॥५॥ **ऋभु ने कहा—** मुझे लगता है कि आप इस नगर की सारी बाते जानते हैं। इसमें राजा कौन है ? और कौन दूसरे लोग हैं ?॥६॥ **निदाघ ने कहा—** यह जो पर्वत शिखर के समान ऊँचे गजेन्द्र के ऊपर बैठा है, वही राजा है और उससे भिन्न अन्य लोग हैं ॥७॥ **ऋभु ने कहा—** इन राजा और हाथी दोनों को

तत्कथ्यतां महाभाग विशेषो भवतानयोः। ज्ञातुमिच्छाम्यहं कोऽत्र गजः को वा नराधिपः ॥९॥

निदाघ उवाच

गजो योऽयमधो ब्रह्मन्नुपर्यस्यैष भूपतिः। वाह्यवाहकसम्बन्धं को न जानाति वै द्विज ॥१०॥

ऋभुरुवाच

जानाम्यहं यथा ब्रह्मंस्तथा मामवबोधय। अधः शब्दनिगद्यं हि किं चोर्ध्वमभिधीयते॥११॥

ब्राह्मण उवाच

इत्युक्तः सहसारुह्य निदाघः प्राह तमृभुम्। श्रूयतां कथयाम्येष यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥१२॥
उपर्यहं यथा राजा त्वमधः कुञ्जरो यथा। अवबोधाय ते ब्रह्मन्दृष्टान्तो दर्शितो मया ॥१३॥

ऋभुरुवाच

त्वं राजेव द्विजश्रेष्ठ स्थितोऽहं गजवद्यदि। तदेतत्त्वं समाचक्ष्व कतमस्त्वमहं तथा॥१४॥

ब्राह्मण उवाच

इत्युक्तः सत्वरं तस्य प्रगृह्य चरणावुभौ। निदाघस्त्वाह भगवानाचार्यस्त्वमृभुर्ध्रुवम् ॥१५॥
नान्यस्याद्वैतसंस्कारसंस्कृतं मानसं तथा। यथाचार्यस्य तेन त्वां मन्ये प्राप्तमहं गुरुम् ॥१६॥

ऋभुरुवाच

तवोपदेशदानाय पूर्वशुश्रूषणादृतः। गुरुस्नेहादृभुर्नाम निदाघ समुपागतः ॥१७॥
तदेतदुपदिष्टं ते संक्षेपेण महामते। परमार्थसारभूतं यत्तदद्वैतमशेषतः ॥१८॥

ब्राह्मण उवाच

एवमुक्त्वा ययौ विद्वान्निदाघं स ऋभुर्गुरुः। निदाघोऽप्युपदेशेन तेनाद्वैतपरोऽभवत् ॥१९॥

आपने एक ही साथ दिखाया है, इन दोनों का अलग-अलग चिह्न नही बतलाया ॥८॥ अतएव हे महाभाग ! आप इन दोनों में होने वाले भेद को बतलाइये मैं यह जानना चाहता हूँ कि हाथी कौन है ? और राजा कौन है ॥९॥ **निदाघ ने कहा—** हे द्विज ! यह जो नीचे है वह हाथी है और जो उसके ऊपर है, वह राजा है दोनों में बाह्य बाहक सम्बन्ध है इस बात को कौन नहीं जानता है ?॥१०॥ **ऋभु ने कहा—** ब्रह्मन् ! इस बात को तो मैं जानता हूँ; किन्तु आप मुझे इस प्रकार समझाये कि नीचे शब्द वाच्य कौन है और ऊपर शब्द वाच्य क्या है ?॥११॥ **ब्राह्मण (जड भरत) ने कहा—** इस तरह से कहे जाने पर निदाघ सहसा ऋभु के ऊपर चढ़ गये और कहे, आपने जो पूछा है, उसे मैं बतलाता हूँ, आप सुनीये ॥१२॥ राजा के समान मैं ऊपर हूँ और हाथी के समान आप नीचे हैं। हे ब्रह्मन् ! आप इस बात को जानिये मैंने आपको दृष्टान्त दिखला दिया ॥१३॥ **ऋभु ने कहा—** हे द्विजश्रेष्ठ ! यदि आप राजा के समान हैं, और मैं हाथी के समान हूँ तो आप यह बतलाये कि आप कौन है ? औंर मैं कोन हूँ?॥१४॥ **ब्राह्मण (जड भरत) ने कहा—** इसतरह से कहे जाने पर निदाघ ने शीघ्र ही ऋभु महर्षि के चरणों को पकड़ कर कहा निश्चय ही आप मेरे आचार्य ऋभु हैं। आपके जैसे अद्वैत के संस्कार से दूसरे का मन संस्कृत नहीं हैं जैसा मेरे आचार्य का मन है। अतएव मैं मानता हूँ कि आप मेरे गुरु ऋभु ही हैं ॥१५-१६॥ **ऋभु ने कहा—** हे निदाघ ! तुमने पहले मेरी बहुत सेवा की थी उसी से प्रसन्न होकर तुम्हें अद्वैत ज्ञानोपदेश करने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ मेरा नाम ऋभु ही है ॥१७॥ हे महामत्ते ! मैंने संक्षेप में तुम्हें परमार्थ के सारभूत अंश का उपदेश कर दिया वह यही है कि सम्पूर्ण जगत् अद्वैत है ॥१८॥ **ब्राह्मण (जड भरत) ने कहा—** वे ऋभु नामक गुरु इस प्रकार से

सर्वभूतान्यभेदेन ददृशे स तदात्मनः। यथा ब्रह्मपरो मुक्तिमवाप परमां द्विजः ॥२०॥
तथा त्वमपि धर्मज्ञ तुल्यात्मरिपुबान्धवः। भव सर्वगतं जानन्नात्मानमवनीपते ॥२१॥
सितनीलादिभेदेन यथैकं दृश्यते नभः। भ्रान्तिदृष्टिभिरात्मापि तथैकः सन्पृथक्पृथक् ॥२२॥
एकः समस्तं यदिहास्ति किञ्चि त्तदच्युतो नास्ति परं ततोऽन्यत्।
सोऽहं स च त्वं स च सर्वमेतदात्मस्वरूपं त्यज भेदमोहम् ॥२३॥

श्रीपराशर उवाच

इतीरितस्तेन स राजवर्यस्तत्याज भेदं परमार्थदृष्टिः।
स चापि जातिस्मरणाप्तबोधस्तत्रैव जन्मन्यपवर्गमाप ॥२४॥
इति भरतनरेन्द्रसारवृत्तं कथयति यश्च शृणोति भक्तियुक्तः।
स विमलमतिरेति नात्ममोहं भवति च संसरणेषु मुक्तियोग्यः ॥२५॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

इति श्रीपराशरमुनिविरचिते श्रीविष्णुपरत्वनिर्णायके श्रीमतिविष्णुमहापुराणे द्वितीयोंऽशः समाप्तः ॥

निदाघ को उपदेश देकर चले गये। निदाघ भी अद्वैत परायण हो गये ॥१९॥ वे सभी जीवों को अपने से अभिन्न रूप से देखने लगे। जिस तरह ब्रह्म परायण वे ब्राह्मण परमामुक्ति को प्राप्त किए, उसी तरह से धर्मज्ञ तुम भी अपने ही समान शत्रुओं तथा बान्धवों में समदर्शी हो जाओ और आत्मा को सर्वव्यापक समझो ॥२०-२१॥ जैसे एक ही आकाश उजला, नीला आदि विभिन्न प्रकार का दिखता है उसी तरह भ्रान्त दृष्टि वालों को एक ही आत्मा भिन्न-भिन्न दिखता है ॥२२॥ इस संसार में जो कुछ भी है, वह एक मात्र भगवान् अच्युत ही हैं। उनसे भिन्न कुछ भी नहीं है। मैं, तुम तथा यह सम्पूर्ण आत्म स्वरूप ही है, तुम भेद रूपी अज्ञान का परित्याग कर दो ॥२३॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** इस तरह उस ब्राह्मण (जड भरत) से कहे जाने पर वह राजा (सौवीरराज) भेद का परित्याग करके परमार्थ दृष्टि वाला हो गया। पूर्वजन्म की बातों को याद रखने वाले वे ब्राह्मण भी ज्ञानवान होने के कारण उसी जन्म में मुक्ति प्राप्त कर लिए ॥२४॥ इस राजा भरत के वृत्तान्त के सार को जो भक्तिपूर्वक कहता और सुनता है उसकी बुद्धि विमल हो जाती है, उसको आत्मा के विषय में अज्ञान नहीं होता है और वह जन्मान्तरों में मुक्ति के योग्य हो जाता है ॥२५॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के द्वितीय अंश के सोलहवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥१६॥

इस तरह पराशर महर्षि प्रणीत श्रीविष्णु भगवान् के परत्व का निर्णायक श्रीविष्णु पुराण का द्वितीय अंश सम्पूर्ण हुआ ॥२॥